Tapati Mukerjee
Associate Prof
Dept. of Music
Rohtas Mahila College
Sasaram

Topic | वीणा के 36" लम्बे तारों पर श्रीनिवास के स्वरों की स्थापना | Theory Paper 6th

Contd Previous on 7.7.2020.

(6) धैवत स्वरों की स्थापना — इनकी स्थापना स्पष्ट नहीं है क्योंकि श्रीनिवास जी ने धैवत स्वर की स्थापना षड्ज - पंचम भाव से किये हैं, षड्ज तथा पंचम स्वर की गुणान्तर $\frac{3}{2}$ है यानि षड्ज से पंचम $1\frac{1}{2}$ अर्थात डेढ़ गुणा ऊंचा है षड्ज पंचम भाव की जोड़ियाँ सा - प, रे - ध, ग - नि, म - सा हैं। जिसके कारण ऋषभ से धैवत स्वर $\frac{3}{2}$ गुणा ऊंचा है।

(7) निषाद स्वर — निषाद स्वर के स्थापना के लिए श्रीनिवास जी ने (प) पंचम से तार षड्ज (सां) तक की तार के लम्बाई को तीन बराबर भागों में विभक्त किये एवं पंचम स्वर से द्वितीय भाग में एवं तार षड्ज से प्रथम भाग में निषाद स्वर की स्थापना किये हैं।

इसके अलावा पं श्रीनिवास जी ने पांच विकृत स्वरों को भी वीणा के तार की लम्बाई पर इस प्रकार स्थापित किये हैं —

(1) कोमल रिषभ — मेरु और शुद्ध रिषभ के तार की लम्बाई को तीन बराबर भागों में विभक्त करते हुए मेरु से द्वितीय भाग में रिषभ स्वर तथा द्वितीय भाग में कोमल रिषभ की स्थापना किये हैं, मेरु से शुद्ध रिषभ की दूरी 4" है, इसको तीन भागों में बांटने से रिषभ की दूरी $\frac{4}{3}$ है, और शुद्ध रिषभ $32" + \frac{4}{3} = 33\frac{1}{3}$ पर स्थापित हुई।

Scanned with CamScanner

(2) कोमल धैवत — कोमल धैवत स्वर की स्थापना श्रीनिवास जी ने शुद्ध धैवत की अनुरूप षड्ज-पंचम भाव से किये। अर्थात कोमल रिषभ से $\frac{3}{2}$" लम्बाई पर कोमल धैवत स्वर स्थापित है, कोमल धैवत षड्ज से $\frac{100}{3} \div \frac{3}{2} = \frac{100}{3} \times \frac{2}{3} = \frac{200}{9} = 22\frac{2}{3}$"
पर स्थापित हुए।

(3) कोमल गांधार — मध्यकाल संगीत ज्ञानकारों के कोमल गांधार को शुद्ध गांधार मानते थे क्योंकि उनका थो वर्तमान काफ़ी के अनुरूप था।
तीव्र गांधार स्वर की स्थापना मेरु और तार धैवत स्वर की बीच में किया करते थे जिसके कारण धैवत और मेरु के बीच की लम्बाई,
$36 - 21\frac{1}{3} = 14\frac{2}{3}$ या $\frac{44}{3}$" है।

(4) कोमल निषाद — जिस प्रकार तीव्र गांधार स्वर को मध्यकाल में विकृत स्वर के रूप में माना जाता था उसी प्रकार कोमल निषाद स्वर को भी विकृत स्वर माना जाता था। धैवत तक का ता श्रीनिवास जी ने स्वर की स्थापना षड्ज (Hi) की लम्बाई को तीन बराबर भागों में विभक्त करते हुए ता षड्ज के प्रथम भाग में स्थापित करते है, धैवत: और तार षड्ज की लम्बाई $21\frac{1}{3} - 18 = 3\frac{1}{7}$ या $\frac{10}{3}$" है।

Next Not be Continued———.

Scanned with CamScanner